



SHRI SHRI VISHWESHA THEERTHA SWAMIJI (POSTHUMOUS)

Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji, popularly and globally known as Shri Pejavara Swamiji of Udupi was a unique Swamiji, always with a difference, in the galaxy of sages in India. He was a spiritual leader, a social guide as well as activist, a harmonious bridge between Indian Sanatana Dharma and changing contemporary modern world; a worshipper of Lord Krishna, a scholar and propagator of Dwaita philosophy of Sri Madhwachaarya (one of the three great Acharyaas of India) and an untired active servant of our society in various dimensions and proportions.

2. Born on 27th April, 1931, in Ramakunja, a small village in Puttur Tq, Dakshina Kannada District of Karnataka Swamiji's childhood name was Venkatraama. At the tender age of eight he was ordained as a Sanyasin to Sri Pejavara Matha, and became Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji. For 82 years he reigned supreme in the realm of Dwaitha faith and became world renowned with his spotless character, with a life marked by purity of heart, absolute adherence to celibacy and spiritual pursuit, acquisition of knowledge and attainment of Himalayan honour and universal acclaim. He had completed the fifth cycle of Krishnapooja (Each cycle has a tenure of 2 years once in 16 years) and this is called Paryaya; which is a record in the history of Sri Krishna Temple. He successfully led the Vishwa Hindu Parishad an organization meant to give a spiritual orientation to the Hindu Society. He became a founder member of the organization and rose to the highly position giving it a spiritual dimension. He took the unique step of restraining the stigma of the practice of untouchability handed down for ages. He held Padayatras in the Dalit settlements of many parts of India, which became a revolutionary step for the Hindu religious order. Simultaneously he laid special emphasis on peace and amity among communities in the nation and was ready for a free open dialogue with the followers of other religions in the country like Muslim and Christians.

3. Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji established 87 branches of his Mutt in different parts of the country. He also established many schools and colleges, service organizations, hospitals, primary health centers, Sanskrit schools, orphanages, free hostels for girls, Dalit and Backward Communities in various parts of Karnataka and elsewhere in the country and they are being run efficiently and smoothly. Presently more than 35 thousand students are getting value based education here in these schools. The Purnaprajna Vidyapeetha and Sanskrit Research Center established in Bangalore 50 years ago is distinguished seat of Sanskrit learning in the country and it has gifted thousands of Sanskrit scholars to the nation. Research on ancient Sanskrit texts, studies, publications of books are also undertaken here. Being a great scholar in Indian philosophy, he had great command over Tarka, Vyaakarana, Vedantha, Kaavya etc., the different branches of Indian philosophy. He had written nearly 25 scholarly works in Kannada and Sanskrit. Two of them 'Nyayamritha Nirnaya' and 'Geethasaaroddhara' (Kannada) have been translated into Hindi and English and have become very popular.

4. During national disasters like earthquakes, floods, Tsunamis, Drought, etc. struck in any region of the country, Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji organized relief measures, took up immediate steps for relief and rehabilitation. In restraining the activities of the Naxals, the silent success of the Swamiji cannot be ignored. He continuously tried to uplift the life of people of naxal effected area by providing food, shelter, and free agricultural lands for unemployed youths. He also started two huge shelters for cows where they are well looked after. Thousands of helpless cows have found safety and good care in these shelters. He was in the forefront of many movements to protest against the reckless exploitation of the Western Ghats, the greatest treasure of Nature in South India through mining and establishment of Industrial enterprises. He has distributed lakhs of free saplings to the people and devotees since many years. He also actively participated and played a key role in Ayodhya Raamajanmabhumi Movement and Ramsethu Raksha Andholan and also different movements to protect environments.

5. For all these unique achievements, Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji was awarded the prestigious title of 'Yatikula Chakravarthi' at the National level 'Dharma Samsat' in 2018. Tumkur University and Srenivassa Deemed University of Mangaluru in Karnataka have conferred Honorary Doctorate Degree to Vishwesha Theertha Swamiji. Eight felicitation volumes have been presented to him by innumerable devotees, disciples and admirers.

6. Shri Shri Vishwesha Theertha Swamiji passed away on 29th December, 2019.





श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि (मरणोपरांत)

उडुपी के श्री पेजावर स्वामीजी के रूप में लोकप्रिय और विश्व प्रसिद्ध श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि को भारत के संत समाज में एक विशिष्ट और अप्रतिम स्वामीजि माना जाता था। वह एक आध्यात्मिक प्रणेता, सामाजिक मार्गदर्शक और कार्यकर्ता, भारतीय सनातन धर्म और परिवर्तनशील समकालीन आधुनिक जगत के बीच एक समरसतापूर्ण सेतुभगवान श्रीकृष्ण के उपासक, श्री माधवाचार्य (भारत के तीन महान आचार्यों में से एक) के द्वैत दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान और प्रचारक तथा विभिन्न आयामों और पहलुओं से हमारे समाज के एक अथक और कर्मठ सेवक थे।

2. 27 अप्रैल, 1931 को, कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ जिले के, पुट्टुर तालुक के एक छोटे से गाँव रामकुंजा में जन्मे, स्वामीजि के बाल्यकाल का नाम वेंकटरामा था। आठ वर्ष की अल्पायु में उन्हें श्री पेजावर मठ में संन्यासी के रूप में दीक्षा दी गई, और वह श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि बन गए। 82 वर्षों तक उन्होंने द्वैत सिद्धांत के सर्वोच्च आभा क्षेत्र में रहकर कार्य किया और अपने पावन चरित्र के द्वारा विश्व विख्यात हुए। उनका जीवन निर्मल भाव, ब्रह्मचर्य के पालन और आध्यात्मिक खोज, ज्ञान प्राप्ति, महासम्मान और विश्व सराहना से परिपूर्ण था। उन्होंने कृष्णपूजा के पर्याय नामक पाँचवें चक्र को पूरा किया था (प्रत्येक चक्र 16 वर्षों में एक बार 2 वर्ष के लिए होता है); जो श्री कृष्ण मंदिर के इतिहास में एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। उन्होंने विश्व हिंदू परिषद का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। यह संगठन हिंदू समाज को आध्यात्मिक दिशा देने के लिए था। श्री विश्वेश तीर्थ स्वामीजी संगठन के संस्थापक सदस्य बने और इसे आध्यात्मिक आयाम देते हुए उच्च पद पर पहुंचे। उन्होंने युगों से चली आ रही छुआछूत की प्रथा के कलंक को दूर करने के लिए अनूठा कदम उठाया। उन्होंने भारत के कई हिस्सों में दलित बस्तियों की पदयात्राएं कीं, जो हिंदू धर्म की वर्ण व्यवस्था के लिए एक क्रांतिकारी कदम था। इसके साथ ही उन्होंने राष्ट्र में समुदायों के बीच शांति और सौहार्द पर विशेष बल दिया। वह देश के मुस्लिम और ईसाई जैसे अन्य धर्मों के अनुयायियों के साथ मुक्त खुले संवाद के लिए तैयार रहते थे।

3. श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि ने देश के विभिन्न हिस्सों में अपने मठ की 87 शाखाओं की स्थापना की। उन्होंने कर्नाटक और देश के अन्य हिस्सों में अनेक स्कूलों और कॉलेजों, सेवा संगठनों, अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, संस्कृत स्कूलों, अनाथालयों, लड़कियों, दलित और पिछड़े समुदायों के लिए मुफ्त छात्रावास की स्थापना की जिन्हें कुशलतापूर्वक और सुचारू रूप से चलाया जा रहा है। वर्तमान में, इन विद्यालयों में 35 हजार से अधिक विद्यार्थी मूल्य आधारित शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। 50 वर्ष पहले बैंगलोर में स्थापित पूर्णप्रज्ञ विद्यापीठ और संस्कृत अनुसंधान केंद्र देश में संस्कृत सीखने की विशिष्ट पीठ है और इसने राष्ट्र को हजारों संस्कृत विद्वान दिए हैं। यहां प्राचीन संस्कृत ग्रंथों पर शोध, अध्ययन, प्रकाशन भी किए जाते हैं। भारतीय दर्शन के एक महान विद्वान होने के नाते, उन्हें भारतीय दर्शन के विभिन्न विभागों, तर्क, व्याकरण, वेदांत, काव्य आदि का विशद ज्ञान था। उन्होंने कन्नड़ और संस्कृत में लगभग 25 विद्वतापूर्ण रचनाएँ लिखी थीं। उनमें से दो 'न्यायामृत निर्णय' और 'गीतासारोद्धारा' (कन्नड़) का अनुवाद हिंदी और अंग्रेजी में किया गया है और ये कृतियां बहुत लोकप्रिय हैं।

4. देश के किसी भी हिस्से में भूकंप, बाढ़, सुनामी, सूखा आदि जैसी राष्ट्रीय आपदाओं के दौरान, श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि ने सहायता कार्य किए तथा राहत और पुनर्वास के लिए तत्काल कदम उठाए। नक्सलियों की गतिविधियों पर लगाम लगाने में, स्वामीजि की मूक सफलता को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। उन्होंने बेरोजगार युवकों को भोजन, आश्रय और मुफ्त कृषि भूमि प्रदान करके नक्सल प्रभावित क्षेत्र के लोगों के जीवन के उत्थान के लिए निरंतर प्रयास किया। उन्होंने गायों के लिए दो गोशालाएं भी बनाई, जहाँ गायों की भली–भांति देखभाल की जाती है। इन गोशालाओं में हजारों बेसहारा गायों की सुरक्षा और सेवा की जाती है। वह खनन और औद्योगिक उद्यमों की स्थापना करके दक्षिण भारत में सबसे विशाल प्राकृतिक निधि पश्चिमी घाटों के अंधाधुंध दोहन के विरोध में किए गए अनेक आंदोलनों में सबसे आगे रहे। उन्होंने कई वर्षों से लोगों और भक्तों को लाखों पौधे मुफ्त वितरित किए हैं। उन्होंने अयोध्या रामजन्मभूमि आंदोलन और रामसेतु रक्षा आंदोलन तथा पर्यावरण रक्षा के विभिन्न आंदोलनों में भी सक्रिय भाग लिया उनमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. इन सभी विलक्षण उपलब्धियों के लिए, श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि को 2018 में राष्ट्रीय स्तर की धर्म संसद में 'यतिकुल चक्रवर्ती' की प्रतिष्ठित उपाधि से सम्मानित किया गया। कर्नाटक के तुमकुर विश्वविद्यालय और श्रीनिवास डीम्ड विश्वविद्यालय मेंगलुरु ने श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि को मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की। असंख्य भक्तों, शिष्यों और प्रशंसकों द्वारा उन्हें आठ प्रशस्ति ग्रंथ भेंट किए गए हैं।

6. श्री श्री विश्वेशतीर्थ स्वामीजि का 29 दिसंबर, 2019 को देहावसान हो गया।